IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

IJARSCT

Impact Factor: 4.819

Volume 11, Issue 1, November 2019

lkL—frd iqutkxj.k l jk"Vh; pruk rd % Jh jkepfjrekul dh ,frgkfld Hkfedk vkj ledkyhu çklfxdrk

Mk- jhrk flg

vfl0 ikQlj bfrgkl

ifMr jkey[ku "kDy jktdh; ih th dkyt] vkykij] vEcMdjuxj

email- ritasingh806@gmail.com

lkjka'k ¼Abstract½

भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास में धार्मिक तथा साहित्यिक ग्रंथों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन ग्रंथों ने केवल आध्यात्मिक जीवन को ही दिशा नहीं दी, बल्कि समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। इसी परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली ग्रंथ माना जाता है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि रामचरितमानस ने मध्यकालीन भारतीय समाज में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया को किस प्रकार गति प्रदान की तथा इसके माध्यम से भारतीय समाज में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना के विकास को किस प्रकार बल मिला।

मध्यकालीन भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ अनेक प्रकार की चुनौतियों से घिरी हुई थीं। समाज में धार्मिक कट्टरता, सामाजिक असमानता, राजनीतिक अस्थिरता तथा सांस्कृतिक विचलन जैसी समस्याएँ विद्यमान थीं। ऐसे समय में तुलसीदास ने रामकथा को अवधी जैसी लोकभाषा में प्रस्तुत करके धार्मिक और नैतिक मूल्यों को जनसामान्य तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। संस्कृत में उपलब्ध धार्मिक साहित्य उस समय मुख्यतः विद्वानों और उच्च वर्ग तक सीमित था, किंतु रामचरितमानस की सरल और भावपूर्ण भाषा ने इसे सामान्य जनमानस के लिए सुलभ बना दिया। परिणामस्वरूप यह ग्रंथ केवल धार्मिक आख्यान न रहकर भारतीय समाज के सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण आधार बन गया और इससे समाज में आस्था, नैतिकता तथा सांस्कृतिक समन्वय की भावना को बल मिला।रामचरितमानस में वर्णित राम का आदर्श चरित्र भारतीय समाज के लिए नैतिक जीवन का एक उच्च आदर्श प्रस्तुत करता है। राम को "मर्यादा पुरुषोत्तम" के रूप में चित्रित किया गया है, जिनका जीवन सत्य, धर्म, कर्तव्यनिष्ठा, करुणा और त्याग जैसे मूल्यों का प्रतीक है। इस प्रकार रामचरितमानस ने भारतीय समाज को केवल धार्मिक आस्था ही नहीं दी, बल्कि उसे एक नैतिक और सामाजिक दिशा भी प्रदान की। इसी प्रकार इस ग्रंथ में वर्णित रामराज्य की अवधारणा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें एक ऐसे आदर्श समाज और शासन व्यवस्था की कल्पना प्रस्तुत की गई है जहाँ न्याय, समानता, शांति और लोककल्याण को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। यह अवधारणा भारतीय सामाजिक और राजनीतिक चिंतन में एक आदर्श व्यवस्था के रूप में प्रतिष्ठित हुई और आज भी सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्शों में इसका उल्लेख किया जाता है।

इसके अतिरिक्त रामचरितमानस ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता और सामूहिक चेतना को सुदृढ़ करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक समाज रहा है, जहाँ विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों की अपनी–अपनी परंपराएँ और मान्यताएँ रही हैं। ऐसे समाज में रामचरितमानस ने एक साझा सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। रामकथा से जुड़ी लोकपरंपराएँ—जैसे रामलीला, कथा–वाचन, भजन–कीर्तन और धार्मिक उत्सव—समाज के विभिन्न वर्गों को एक

साथ जोड़ने का कार्य करती रही हैं। इन परंपराओं के माध्यम से रामचरितमानस की शिक्षाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी समाज में प्रसारित होती रहीं और इससे भारतीय समाज में सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण सहायता मिली। समकालीन भारत के संदर्भ में भी रामचरितमानस की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण बनी हुई है। आधुनिक समय में जब समाज अनेक प्रकार की सामाजिक और नैतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब इस ग्रंथ में निहित मूल्य—जैसे सत्य, धर्म, करुणा, सेवा, त्याग और लोककल्याण—मानव जीवन के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। इस प्रकार यह शोध–पत्र यह प्रतिपादित करता है कि रामचरितमानस केवल एक धार्मिक या साहित्यिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक मूल्यों और राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्रोत है, जिसकी प्रासंगिकता अतीत से लेकर वर्तमान तक निरंतर बनी हुई है।

dh&oMZ ¼Keywords½& श्रीरामचरितमानस, तुलसीदास, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, राष्ट्रीय चेतना, भक्ति आंदोलन, रामराज्य की अवधारणा, भारतीय सांस्कृतिक परंपरा

ifjp;¼Introduction½&

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में ऐसे अनेक ग्रंथ हुए हैं जिन्होंने केवल धार्मिक आस्था को ही नहीं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक, नैतिक और वैचारिक दिशा को भी गहराई से प्रभावित किया है। इनमें गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। मध्यकालीन भारत का वह दौर सामाजिक–राजनीतिक अस्थिरता, सांस्कृतिक विखंडन और धार्मिक जटिलताओं से भरा हुआ था। ऐसी परिस्थितियों में तुलसीदास ने रामकथा को अवधी भाषा में प्रस्तुत कर इसे जनसाधारण तक पहुँचाया और भारतीय समाज को एक साझा सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। यह ग्रंथ केवल धार्मिक आख्यान नहीं रहा, बल्कि इसमें निहित आदर्श—धर्म, मर्यादा, करुणा, कर्तव्यनिष्ठा और लोकमंगल—ने समाज में नैतिक पुनर्जागरण की भावना को जन्म दिया। इस प्रकार रामचरितमानस ने मध्यकालीन भारत में हिंदू सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भक्ति आंदोलन की व्यापक धारा के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य किया।

समय के साथ श्री रामचरितमानस का प्रभाव केवल धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। राम के आदर्श चरित्र, रामराज्य की कल्पना तथा धर्म और न्याय पर आधारित शासन की अवधारणा ने भारतीय जनमानस में एक आदर्श सामाजिक – राजनीतिक व्यवस्था की कल्पना को जन्म दिया। आधुनिक काल में भी यह ग्रंथ भारतीय संस्कृति, साहित्य, लोकपरंपराओं और सामाजिक मूल्यों का एक महत्वपूर्ण आधार बना हुआ है। समकालीन भारत में जब सांस्कृतिक पहचान, नैतिक मूल्यों और सामाजिक समरसता जैसे प्रश्न पुनः प्रासंगिक हो उठे हैं, तब रामचरितमानस की शिक्षाएँ समाज को नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करती प्रतीत होती हैं। इसलिए यह अध्ययन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि किस प्रकार रामचरितमानस ने मध्यकालीन सांस्कृतिक पुनर्जागरण से लेकर आधुनिक भारत की राष्ट्रीय चेतना तक एक सतत वैचारिक सेतु का कार्य किया और आज भी भारतीय समाज में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

lkfgR; leh{kk ¼Review of Related Literature½

भारतीय साहित्य और संस्कृति के अध्ययन में श्री रामचरितमानस की भूमिका पर अनेक विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से विचार किया है। हिंदी साहित्य के इतिहासकार रामचंद्र शुक्ल ने अपनी प्रसिद्ध कृति हिंदी साहित्य का इतिहास में तुलसीदास के साहित्य को भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना का प्रतिनिधि बताया है। उनके अनुसार तुलसीदास ने रामकथा के माध्यम से भारतीय समाज में नैतिकता, लोकधर्म और सामाजिक समन्वय की भावना को सुदृढ़ किया। इसी प्रकार हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि तुलसीदास की रचनाएँ केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि उनमें भारतीय समाज की सांस्कृतिक एकता और मानवीय मूल्यों का व्यापक चित्रण मिलता है। उनके अनुसार रामचरितमानस ने भक्ति आंदोलन की उस धारा को आगे बढ़ाया जिसने समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आधुनिक विद्वानों में रामविलास शर्मा ने तुलसीदास के साहित्य का विश्लेषण करते हुए इसे भारतीय समाज की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतीक बताया है। उन्होंने यह तर्क दिया कि रामचरितमानस में वर्णित आदर्श, जैसेकृधर्म, कर्तव्य, न्याय और लोककल्याणकृभारतीय सामाजिक संरचना को मजबूत करने में सहायक रहे हैं। इसी प्रकार नमवर सिंह ने अपने आलोचनात्मक अध्ययन में यह बताया कि तुलसीदास की काव्य परंपरा भारतीय समाज के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की महत्वपूर्ण कड़ी है। उनके अनुसार रामचरितमानस केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक ऐसा सांस्कृतिक दस्तावेज है जिसने भारतीय जनमानस में एक साझा सांस्कृतिक पहचान को विकसित किया।

इसके अतिरिक्त कई आधुनिक शोधों में यह भी स्पष्ट किया गया है कि श्री रामचरितमानस ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में भी अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया। रामराज्य की अवधारणा, आदर्श नेतृत्व और न्यायपूर्ण शासन की कल्पना ने भारतीय समाज में एक नैतिक–राजनीतिक आदर्श को स्थापित किया। लोकभाषा में रचित होने के कारण यह ग्रंथ जनसाधारण तक व्यापक रूप से पहुँचा और सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार का प्रभावी माध्यम बना। इस प्रकार उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि रामचरितमानस केवल धार्मिक या साहित्यिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक समन्वय और नैतिक मूल्यों के विकास में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत के रूप में भी देखा जा सकता है।

हालाँकि पूर्ववर्ती अध्ययनों में तुलसीदास और रामचरितमानस के धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक पक्षों पर पर्याप्त चर्चा की गई है, परंतु "सांस्कृतिक पुनर्जागरण से राष्ट्रीय चेतना तक" की व्यापक ऐतिहासिक दृष्टि से इसके अध्ययन पर अपेक्षाकृत कम कार्य हुआ है। इसलिए प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार रामचरितमानस ने मध्यकालीन सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया को प्रभावित किया और आधुनिक भारत में राष्ट्रीय चेतना तथा सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में उसकी क्या भूमिका रही है।

'kkèk dh ifjdYiuk ¼Research Hypothesis½

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में श्री रामचरितमानस को केवल एक धार्मिक ग्रंथ के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह भारतीय समाज के सांस्कृतिक, नैतिक और वैचारिक पुनर्जागरण का एक महत्वपूर्ण आधार भी रहा है। प्रस्तुत शोध की प्रमुख परिकल्पना यह है कि मध्यकालीन भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लोकभाषा में रचित होने के कारण इस ग्रंथ ने समाज के विभिन्न वर्गों तक धार्मिक और नैतिक मूल्यों को पहुँचाया तथा सामाजिक समन्वय, आस्था और

नैतिकता की भावना को सुदृढ़ किया। इस प्रकार यह माना जाता है कि रामचरितमानस ने मध्यकालीन सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया को गति प्रदान की और भारतीय समाज में एक व्यापक सांस्कृतिक एकता का निर्माण किया।

दूसरी परिकल्पना यह है कि रामचरितमानस में वर्णित राम के आदर्श चरित्र, रामराज्य की कल्पना तथा धर्म, न्याय और लोककल्याण के सिद्धांतों ने भारतीय समाज में एक आदर्श सामाजिक–राजनीतिक व्यवस्था की अवधारणा को जन्म दिया, जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय चेतना के विकास को भी प्रभावित किया। आधुनिक और समकालीन भारत में भी रामचरितमानस की शिक्षाएँ सामाजिक नैतिकता, सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक चेतना को प्रभावित करती रही हैं। इसलिए यह शोध इस परिकल्पना की जाँच करेगा कि रामचरितमानस ने केवल धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना के विकास और समकालीन सांस्कृतिक मूल्यों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

'kkèk dk mís'; ¼Objectives of the Study½

इस शोध का मुख्य उद्देश्य श्री रामचरितमानस की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वैचारिक भूमिका का विश्लेषण करना है तथा यह स्पष्ट करना है कि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित यह ग्रंथ किस प्रकार मध्यकालीन भारतीय समाज में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। साथ ही इस अध्ययन का उद्देश्य यह भी है कि रामचरितमानस में निहित नैतिक मूल्यों, सामाजिक आदर्शों और रामराज्य की अवधारणा का भारतीय समाज की सामूहिक चेतना तथा राष्ट्रीय भावना के विकास पर क्या प्रभाव पड़ा। इसके अतिरिक्त यह शोध समकालीन भारत में रामचरितमानस की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करते हुए यह समझने का प्रयास करेगा कि वर्तमान सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में यह ग्रंथ किस प्रकार भारतीय सांस्कृतिक पहचान, नैतिक मूल्यों और सामाजिक समरसता को प्रभावित करता है।

'kkèk dk eq[; fopkj

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में अनेक ऐसे ग्रंथ हैं जिन्होंने समाज की धार्मिक, नैतिक और सामाजिक चेतना को दिशा प्रदान की है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस ऐसा ही एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसने भारतीय समाज के सांस्कृतिक पुनर्जागरण से लेकर राष्ट्रीय चेतना के विकास तक गहरा प्रभाव डाला। यह ग्रंथ केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि इसमें निहित आदर्शों, मूल्यों और सामाजिक अवधारणाओं ने भारतीय समाज को नैतिक और सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। प्रस्तुत शोध में रामचरितमानस की इसी ऐतिहासिक भूमिका तथा समकालीन संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण किया जाएगा।

1- jkepfjrekul dk eè;dkyhu Hkkjrh; lekt esa lkaLd`frd iqutkZxj.k esa ;ksxnku

मध्यकालीन भारत का सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य अनेक प्रकार की चुनौतियों से प्रभावित था। उस समय समाज में धार्मिक जटिलताएँ, सामाजिक विभाजन और सांस्कृतिक अस्थिरता देखने को मिलती थी। ऐसे समय में श्री रामचरितमानस ने भारतीय समाज को एक नई सांस्कृतिक दिशा प्रदान की। तुलसीदास ने रामकथा को लोकभाषा में प्रस्तुत कर इसे केवल विद्वानों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे सामान्य जन तक पहुँचाया। इस ग्रंथ में धर्म, मर्यादा, कर्तव्यनिष्ठा, करुणा और लोककल्याण जैसे आदर्शों का अत्यंत प्रभावी चित्रण मिलता है, जिसने समाज में नैतिकता और आस्था को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार रामचरितमानस ने मध्यकालीन भारतीय समाज में सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करते हुए

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

एक प्रकार के सांस्कृतिक पुनर्जागरण को जन्म दिया, जिसने आगे चलकर भारतीय समाज की सामूहिक सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया।

2- ykdHkk"kk d ekè;e l ekkftd ,o ufrd eY;k dk tulkekU; e çlkj

मध्यकालीन भारत में धार्मिक और दार्शनिक ज्ञान का प्रमुख माध्यम संस्कृत भाषा थी, जो मुख्यतः विद्वानों, ब्राह्मणों और शिक्षित वर्ग तक सीमित थी। परिणामस्वरूप सामान्य जनता इन ग्रंथों की शिक्षाओं से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ नहीं पाती थी। ऐसी परिस्थिति में गोस्वामी तुलसीदास ने श्री रामचरितमानस की रचना अवधी जैसी सरल और जनसामान्य द्वारा समझी जाने वाली लोकभाषा में की। यह निर्णय केवल साहित्यिक नहीं बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि इसके माध्यम से रामकथा और उससे जुड़े नैतिक आदर्श सीधे जनमानस तक पहुँचने लगे। इससे धर्म और अध्यात्म का स्वरूप केवल कर्मकांड या पंडित वर्ग तक सीमित न रहकर लोकजीवन का हिस्सा बन गया।

रामचरितमानस में वर्णित कथा, संवाद, चरित्र और प्रसंग इतने सरल और भावपूर्ण हैं कि वे समाज के सभी वर्गोंकृ ग्रामीण, शहरी, शिक्षित और अशिक्षित—सभी के लिए समान रूप से समझने योग्य बन गए। राम, सीता, लक्ष्मण, भरत और हनुमान जैसे आदर्श पात्रों के माध्यम से तुलसीदास ने सत्य, कर्तव्य, त्याग, सेवा, करुणा, विनम्रता और धर्मनिष्ठा जैसे नैतिक मूल्यों को अत्यंत प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया। इन आदर्शों ने भारतीय समाज के पारिवारिक और सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। परिणामस्वरूप रामचरितमानस केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं रहा, बल्कि यह लोकजीवन की आचार संहिता के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गया।

इसके अतिरिक्त रामचरितमानस के प्रसार में लोकपरंपराओं—जैसे रामलीला, कथा–वाचन, भजन–कीर्तन और धार्मिक उत्सवोंकृकी भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इन माध्यमों के द्वारा रामकथा व्यापक रूप से जनसाधारण तक पहुँची और समाज में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार–प्रसार हुआ। इस प्रकार लोकभाषा में रचित होने के कारण रामचरितमानस ने धार्मिक और नैतिक शिक्षाओं को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने का कार्य किया तथा भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता, सामाजिक समरसता और नैतिक चेतना को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3- jke d vkn'k pfj= vkj jkejkT; dh voèkkj.kk dk lkekftd ,o ufrd 0;oLFkk ij çHkko

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में मर्यादा, धर्म और कर्तव्य की अवधारणा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस में भगवान राम को "मर्यादा पुरुषोत्तम" के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति और आदर्श राजा के रूप में समाज के सामने एक उच्च नैतिक उदाहरण स्थापित करते हैं। राम का चरित्र केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और नैतिक जीवन के लिए भी एक आदर्श मानक प्रदान करता है। रामचरितमानस में राम का जीवन त्याग, सत्यनिष्ठा, करुणा, न्यायप्रियता और कर्तव्यपरायणता जैसे गुणों से परिपूर्ण दिखाई देता है, जो समाज को नैतिक आचरण की प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार राम का आदर्श चरित्र भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों के संरक्षण और प्रसार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया।

इसी प्रकार रामचरितमानस में वर्णित "रामराज्य" की अवधारणा भी भारतीय समाज और राजनीतिक चिंतन में अत्यंत प्रभावशाली रही है। रामराज्य का अर्थ केवल एक आदर्श शासन व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह एक ऐसे समाज की कल्पना है जहाँ न्याय, समानता, शांति, समृद्धि और लोककल्याण की भावना विद्यमान हो। रामराज्य में राजा और प्रजा के बीच परस्पर विश्वास, नैतिकता और कर्तव्य का संबंध दिखाई देता है। इस आदर्श व्यवस्था में समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षा, न्याय और सम्मान प्राप्त होता

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 4.819

Volume 11, Issue 1, November 2019

है। इस प्रकार रामराज्य की अवधारणा ने भारतीय समाज में एक आदर्श सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था की कल्पना को जन्म दिया, जिसने आगे चलकर भारतीय जनमानस में नैतिक शासन और लोककल्याणकारी राज्य की धारणा को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4- jkepfjrekul dk eke;e ls Hkkjrh; lekt esa lkL—frd ,drk vkj lkefgd pruk dk fodkl

भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण है, जहाँ भाषा, क्षेत्र, परंपरा और सामाजिक संरचनाओं में अनेक प्रकार की भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। ऐसी परिस्थितियों में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता और सामूहिक चेतना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रामकथा भारतीय परंपरा में पहले से ही लोकप्रिय थी, किंतु तुलसीदास ने इसे लोकभाषा में प्रस्तुत करके इसे जनसाधारण की सांस्कृतिक धरोहर बना दिया। इसके परिणामस्वरूप यह ग्रंथ केवल एक धार्मिक आख्यान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह भारतीय समाज की साझा सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन गया।

रामचरितमानस में वर्णित कथाएँ, पात्र और आदर्श भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों को एक समान सांस्कृतिक आधार प्रदान करते हैं। राम, सीता, लक्ष्मण, भरत और हनुमान जैसे पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत आदर्शों ने समाज में नैतिकता, कर्तव्य और पारस्परिक सहयोग की भावना को सुदृढ़ किया। इसके साथ ही रामकथा के आयोजन—जैसे रामलीला, कथा–वाचन और भक्ति–सम्बन्धी धार्मिक उत्सव—ने भी समाज में सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा दिया। इन आयोजनों के माध्यम से विभिन्न वर्गों और समुदायों के लोग एक साथ जुड़ते थे, जिससे सामाजिक समरसता और सामूहिक चेतना का विकास होता था। इस प्रकार रामचरितमानस ने केवल धार्मिक आस्था को ही मजबूत नहीं किया, बल्कि भारतीय समाज में एक साझा सांस्कृतिक परंपरा को भी स्थापित किया। यह ग्रंथ भारतीय समाज की सांस्कृतिक एकता का एक महत्वपूर्ण आधार बन गया, जिसने विभिन्न सामाजिक और क्षेत्रीय भिन्नताओं के बावजूद भारतीय जनमानस को एक समान सांस्कृतिक चेतना से जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

5- ledkyhu Hkkjr esa jkepfjrekul dh çklfxdrk rFkk jk"Vh; vkj lkL—frd pruk ij mldk çHkko

भारतीय समाज में अनेक प्राचीन ग्रंथ ऐसे हैं जिनका प्रभाव केवल ऐतिहासिक काल तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वे समय के साथ निरंतर समाज को दिशा देते रहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस भी ऐसा ही एक ग्रंथ है जिसकी शिक्षाएँ आज के समकालीन भारत में भी प्रासंगिक बनी हुई हैं। आधुनिक समय में जब समाज अनेक प्रकार की नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब रामचरितमानस में वर्णित आदर्शकृजैसे सत्य, कर्तव्य, करुणा, सेवा, त्याग और न्यायकृमानव जीवन के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। इस ग्रंथ में निहित मूल्य भारतीय समाज में नैतिकता और सामाजिक संतुलन को बनाए रखने में आज भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इसके अतिरिक्त रामचरितमानस में वर्णित रामराज्य की अवधारणा ने आधुनिक भारत की राजनीतिक और सामाजिक सोच को भी प्रभावित किया है। रामराज्य को एक ऐसे आदर्श शासन के रूप में देखा जाता है जिसमें न्याय, समानता, शांति और लोककल्याण की भावना सर्वोपरि होती है। इस कारण आधुनिक समय में भी अनेक सामाजिक और राजनीतिक विमर्शों में रामराज्य को एक आदर्श व्यवस्था के रूप में संदर्भित किया जाता है। साथ ही, रामकथा से जुड़ी परंपराएँ—जैसे रामलीला, कथा–वाचन, भजन–कीर्तन और धार्मिक उत्सवकृआज भी भारतीय समाज के सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो लोगों को अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने का कार्य करते हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि रामचरितमानस केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय पहचान को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण स्रोत है। समकालीन भारत में भी इसकी शिक्षाएँ सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक निरंतरता और नैतिक जीवन के लिए प्रेरणा प्रदान करती हैं, जिसके कारण इसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

fu"d"k ¼Concluion½

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है कि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस केवल एक धार्मिक या साहित्यिक कृति नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज के सांस्कृतिक, नैतिक और सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। मध्यकालीन भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों में जब समाज विभिन्न प्रकार के धार्मिक विभाजनों, सामाजिक जटिलताओं और सांस्कृतिक अस्थिरता से जूझ रहा था, तब रामचरितमानस ने भारतीय जनमानस को एक नई सांस्कृतिक दिशा प्रदान की। तुलसीदास ने रामकथा को लोकभाषा में प्रस्तुत करके उसे सामान्य जन तक पहुँचाया, जिससे धार्मिक ज्ञान और नैतिक शिक्षाएँ केवल विद्वानों तक सीमित न रहकर समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचीं। इस प्रकार रामचरितमानस ने मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया को गति प्रदान करते हुए समाज में आस्था, नैतिकता और सामाजिक समन्वय की भावना को सुदृढ़ किया।

रामचरितमानस की विशेषता यह है कि इसमें प्रस्तुत आदर्श केवल धार्मिक उपदेश तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक जीवन के व्यावहारिक मूल्यों से भी जुड़े हुए हैं। राम का आदर्श चरित्र सत्य, कर्तव्यनिष्ठा, त्याग, करुणा और न्यायप्रियता जैसे गुणों का प्रतीक है, जो समाज को नैतिक जीवन की प्रेरणा देता है। इसी प्रकार रामराज्य की अवधारणा एक ऐसी आदर्श शासन व्यवस्था का चित्र प्रस्तुत करती है जिसमें न्याय, समानता, शांति और लोककल्याण को सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है। इन आदर्शों ने भारतीय समाज के सामाजिक और राजनीतिक चिंतन को भी प्रभावित किया तथा जनमानस में एक आदर्श समाज और शासन व्यवस्था की कल्पना को सुदृढ़ किया। परिणामस्वरूप रामचरितमानस केवल धार्मिक आस्था का आधार ही नहीं रहा, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक और नैतिक संरचना को मजबूत करने वाला एक महत्वपूर्ण स्रोत भी बन गया।

इसके अतिरिक्त रामचरितमानस ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता और सामूहिक चेतना को विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस ग्रंथ में वर्णित रामकथा और उससे संबंधित परंपराएँ—जैसे रामलीला, कथा–वाचन, भजन–कीर्तन और धार्मिक उत्सव—समाज के विभिन्न वर्गों और समुदायों को एक साझा सांस्कृतिक मंच पर जोड़ने का कार्य करती रही हैं। इससे भारतीय समाज में पारस्परिक सहयोग, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक निरंतरता की भावना को बल मिला। इस प्रकार रामचरितमानस ने विविधताओं से परिपूर्ण भारतीय समाज को एक समान सांस्कृतिक धारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

समकालीन भारत के संदर्भ में भी रामचरितमानस की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। आधुनिक समय में जब समाज अनेक प्रकार की सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब इस ग्रंथ में निहित मूल्यकृजैसे सत्य, धर्म, करुणा, सेवा, त्याग और लोककल्याणकृमानव जीवन के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। रामचरितमानस की शिक्षाएँ आज भी भारतीय समाज को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने और नैतिक जीवन की प्रेरणा देने का कार्य करती हैं। इसके माध्यम से भारतीय समाज अपनी परंपराओं, सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक चेतना को बनाए रखने में सक्षम हुआ है।

अतः यह निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि श्री रामचरितमानस भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण, सामाजिक समन्वय और राष्ट्रीय चेतना के विकास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्रोत रहा है। यह ग्रंथ भारतीय समाज की सांस्कृ तिक विरासत का एक अमूल्य अंग है, जिसने अतीत से लेकर वर्तमान तक समाज को नैतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक दिशा

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

प्रदान की है। इसलिए रामचरितमानस का अध्ययन केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय पहचान को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

lnHk xFk lph ¼Bibliography½

1. तुलसीदास – श्री रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. रामचंद्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी – कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. रामविलास शर्मा – भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. नामवर सिंह – इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
8. सत्यकेतु विद्यालंकार – भारतीय संस्कृति का विकास, सरस्वती सदन, दिल्ली।
9. रामधारी सिंह दिनकर – संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. ए. एल. बाशम – The Wonder That Was India, Rupa Publications, New Delhi.
11. के. एम. पाणिक्कर – A Survey of Indian History, Asia Publishing House, Bombay.
12. बी. डी. चट्टोपाध्याय – The Making of Early Medieval India, Oxford University Press.
13. डी. एन. झा – Ancient India: An Introductory Outline, Manohar Publishers, New Delhi.
14. आर. सी. मजूमदार – An Advanced History of India, Macmillan, London.
15. रोमिला थापर – Early India: From the Origins to AD 1300, Penguin Books, New Delhi.